भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-9, अंक-5-6	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
गुरुवार, 12 जून.'86	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे	प्रति अंक : 1.00

12 जून... प. पू. काकाजी का प्राकट्यदिन

स्वामिनारायण संप्रदाय व समग्र गुणातीतसमाज को कभी न भूलने वाला आज का महामंगलदिन '12 जून' अर्थात् हमारे आत्मीय स्वजन करुणासिन्धु प.पू. काकाजी का प्राकट्य दिन.....

अहोहो ! कैसी विनम्रवाणी ! कैसी चित्त को सहज खींचती मुद्रा ! कैसी प्रभु के दिव्यस्वरूप की सिंहगर्जना ! कैसी निर्मल पवित्रता-सरलता की मूर्ति ! सब कुछ अद्भुत, अविस्मरणीय, अद्वितीय, अनोखा ! क्या वर्णन करें? उस अमृत के सागर को छोटे पात्र में कैसे भरें? ''धन्य धन्य इस संत सुजान को।''

करोड़ों वंदन हों गुरुहरि योगीजी महाराज को जिन्होंने ऐसे शूरवीर समर्थ मानसपुत्र को अपनी धर्ममशाल सौंपी.....पारस से पारस का निर्माण हुआ ! शेरनी का दूध स्वर्णपात्र में ही तो टिक सकता है न? बचपन से ही इनकी प्रतिभा तो अनोखी थी; सात वर्ष की अल्प आयु में धरती पर स्वर्ग उतारने की बात करने वाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं हो सकता....प्रभु को रखें वह प्रभु का स्वरूप ! उन्होंने स्वयं गुरुहरि योगीजी महाराज को जैसे थे वैसे पहचाने इतना ही नहीं, बल्कि अक्षरधाम के जिस सुख, शान्ति, आनन्द का उन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज की अनहद कृपा से अनुभव किया था उस सुख के अपिरमिति सागर में संबंध में आये हरेक को झबोये और भागीदार बनाने की ही इच्छा जीवन के अंतिम क्षणों तक रखी...कैसी अनुपम प्रीति ! अविरत साधना ! सरलता, पवित्रता और निर्दोषता की करुणामूर्ति को हमारे करोड़ो वंदन हों।

कालसरिता तीव्र गति से बहती रहती है, बीता अवसर वापस नहीं आता, समय भी जल्दी बदलता रहता है—लेकिन अपने प्रियजन की स्मृति अखंड बनी रहती है। हमने उनके जैसे देखे थे, सुने थे और समझे थे, प.पू. काकाजी आज भी हमारे लिये वैसे ही जीवंत—प्रगट हैं। न उनका स्वरूप बदला है, न उनका सामर्थ्य और न ही उनकी प्रतिष्ठा। स्थूल देह से वह अब हमें अपनी मूर्ति का सुख देने भले नहीं रहे लेकिन दिव्यस्वरूप से वह पल-पल हमारे आस-पास हैं। वह महामंगलकारी, हितकारी, आनन्दकारी मूर्ति थी...नायगरा फाल के निश्चल घोघ की तरह अस्खलित प्रेम का बहता झरना....न कोई अपेक्षा....न कोई उपेक्षा....सूर्यसमान भेददृष्टिरहित अविरत रूप

से बिना कारण केवल सबका हित ही–मानव चेतना का परम कल्याण करने के लिए ही जीवन भर परिश्रम करते रहे.....

दिव्यमूर्ति प.पू. काकाजी के गुणों के बारे में क्या व्याख्यान करें? समुद्र की गहराई शायद वैज्ञानिक यन्त्रों की सहायता के नापना संभव है पर प.पू. काकाजी...! वह हमारे साथ हमारी कक्षा पर आकर हमारे सहृदयी बने। स्वयं ने खूब सहा.... गुरुहरि योगीजी महाराज को किसी ने एक बार पूछा कि आप इतना सब क्यों सहन करते हो? तो गुरुहरि योगीजी महाराज ने तुरन्त सहजावस्था में उत्तर दिया 'आप सबके लिये!!' अपने गुरु के ही पद्चिह्नों पर प.पू. काकाजी ने अपना निशान रखा। गुरुहरि के वचन में खो जाना, अपने अस्तित्व को ही मिटा देना...हमारे लिये अपने खून का पानी कर दिया– आखिर अपनी आयुष्य भी कम कर दी ! शत्रु हो या मित्र, पापी या पुण्यशाली, अमीर या गरीब–सर्वत्र समभाव ! चंदन की तरह स्वयं अपनी जात को घिस कर समग्र गुणातीत समाज को सुगन्धित बनाया। भक्तों के सुख के नहीं बल्कि दुःख के भागीदार बने... कभी किसी के लिये अरुचि नहीं, उदासीनता नही....बस चौबीस घंटे गुरुहरि योगीजी महाराज की महिमा का गुणगान !

हम सभी प.पू. काकाजी के पास अर्जुन बनकर रहे। तर्क-वितर्क, बुद्धि से उन्हें नापते रहे....अपनी मनमानी-मान्यताओं को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुए और वह करुणासिन्धु अपनी करुणा, प्रेम लुटाता ही रहा.... नित्य मंगलप्रभा से अर्धरात्री तक सुहृद्भाव... सुहृद्भाव....सुहृद्भाव....

सुहृद्भाव प.पू. काकाजी का प्राण था। वह कई बार कहा करते थे ''एक रुचि वाले अगर तुम दो भी हो तो वह मेरे लिये दो लाख के बराबर हो।'' स्वयं ने सर्वदेशीयता की भावना से सबकी सेवा की और अपने संबंध में आये हुओं को भी उसी सिद्धान्त पर चलना सिखाया। शूरवीरता, धनसत्ता, प्रभुसत्ता के अपार ऐश्वर्य के सम्राट होते हुए भी गुरुहरि योगीजी महाराज के पास तो दास बने ही रहे, साथ ही अल्प संबंध में आये हुए भक्तों के भी सेवक बन कर रहे। कीर्ति, कंचन, कामिनी तो 1952 की अनुभूति होने से पहले ही चरणों की दासी थी, लेकिन अपने गुरुहरि को राजी करने हेतु सर्वस्व सौंप दिया। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपनी निष्ठा छोड़ी नहीं..स्वयं प्रभु के स्वरूप होते हुए भी एक दास का जीवन जीकर हमारे लिये आदर्श छोड़ गये। संबंध में आये हरेक को प्रभु का बल लेकर, प्रभु के सहारे, प्रभु के अधीन ही जीवन जीना सिखाया....कभी अपनी अलमस्ती जाने नहीं दी....मुखारविन्द पर तो शरीर छोड़ने के बाद भी वही स्मित...! किसी ने कभी भी उलझन या परेशानी के भाव उनके चेहरे पर नहीं देखे होंगे....वह हंसती-हंसाती आनन्दकारी मूर्ति सभी को आनन्द कराने ही, कल्याण करने ही मानवस्वरूप में विचरण करती रही और हम...? वास्तव में तो हमारी साधना, हमारा भजन भी वह करते रहे और गुणातीत फूलवाड़ी जब अपनी चरम सीमा पर फलने-फूलने लगी तब उस विरल योगी ने स्वतंत्र रूप से सभी से विदाई ले ली ! सारे गुणातीत समाज का रोम-रोम उस परम चेतना का जन्मोंजन्म तक ऋणी रहेगा।

☆ ☆ ☆

गुरुभक्ति का अर्घ्य

'मुझे सबको वच. ग. प्र. 27 जैसे करने हैं' योगीजी महाराज का यह स्वप्न गुणातीतसमाज के सभी भक्तों में साकार करने असाधारण परिश्रम करते हुए प.पू. काकाजी जीवन की पल-पल जीये। दि. 26-1-86 को गुणातीत ज्योत के प्रांगण में मनाये जा रहे अपने स्वरूपानुभूति दिन उन्होंने योगी परिवार के पास दिल खोलकर बात की और हमसे वे क्या कराना चाहते थे....हमसे उनकी क्या चाहना थी....अपने अंतिम प्रवचन में यह 'मेग्नाकार्टा' के रूप में सभी को दे गेये। 26 जनवरी के दिन उनके चेहरे पर एक अनोखी आभा विद्यमान थी...खूब बातें

की...इतना आनन्द कराके भूलभलैया में सभी को बहा दिये...कि उनकी वह बातों को उस समय हम समझ पाये नहीं...इसलिए गुरुहरि प.पू. पप्पाजी ने खूब सरल शब्दों में सारी बातों को साररूप 'नौ पाईन्ट्स' के रूप में हम सभी के समझने अपने जीवन में उतारने छांट कर दियेहैं। तो अब प.पू. पप्पाजी के ही शब्दों में–'हम उनके संप, सुहृद्भाव, एकता के कार्य को सब कुछ उलटा कर भी साकार करें। मन को मार कर, जंचना–नहीं जंचना की भावना, अपने-पराये की भेददृष्टि को छोड़कर उनकी प्रसन्नता के अर्थ ही जीने का आग्रह रखकर वर्तन करें... उनका ऋण अदा करने 26 जनवरी को दिए उनके स्पष्ट सूचनरूप 'मेग्नाकार्टा' को हम अपना जीवन बनाकर उन्हें गुरुभक्ति का सच्चा अर्ध्य दें और हमारे लिये किये गये उनके अथक् परिश्रम को सार्थक करने उनकी परावाणी का बूंद झेलें...वह ही है ऐसे भव्यस्वरूप को भावांजलि ! और वही हमारी उनके प्रति सच्ची गुणतीत प्रीति होगी.....

1. स्वामी बापा हमारे प्रभु थे। तब भी वे सहजानन्द स्वामी को, शास्त्रीजी महाराज को आगे रखकर ही–वे तनिक भी गौण न हो इस रीत से ही बर्ते। वे कहते थे कि हम तो महाराज और गुणातीत के बैल हैं।
2. सचमुच जो गुणातीतस्वरूप होगा, जो निरंतर गुणातीत भाव में रहता होगा उसका तो सत्संग में कहीं भी नामोनिशान नहीं मिलेगा; जैसे कि गुणातीत का नाम सारे वचनामृत में नहीं है। भगतजी, जागास्वामी, अदा का नाम नहीं है। सत्संग में गुणातीत स्वरूप को तो मुमुक्षुओं को ढूंढ ही लेना पड़ेगा।

गुणातीतानन्द स्वामी की बात–

गुरु करने मे तीन प्रकार की शुद्धि देखकर गुरु करनाः

(1) उनके गुरु का वर्तन निर्मानी, निष्कामी, निःस्वादी, निर्लोभी, निःस्नेही है?
(2) उनका खुद का वर्तन पंचवर्तमानयुक्त है?
(3) उनसे हुए सेवकों का वर्तन ऐसा है?

यह देखकर गुरु करना।

3. सिद्ध होंगे सर्वज्ञ होंगे, अध्धर उड़ते होंगे, पानी पर चलते होंगे, जमीन में डट कर रहते होंगे, करोड़ों व्यक्तियों को सत्संग कराते होंगे पर मनमानी करते रहेंगे या अपने वर्तन में प्रत्यक्ष गुरु की निष्काम भक्ति के सिवा यदि थोड़ा भी मन का आभास रहेगा वह अलौकिक भूमिका है। मूर्ति के बल से ऐसी सिद्धि को पायें और प्रकृतिपुरुष के भीतर के विषयों में झूलें....वह ही है संकल्प की बीमारी !

   हमारा वर्तन ऐसा है–वह कैसे जाना जायेगा? तुम किसी के अभाव-अवगुण में पड़ोंगे–क्षोभ रहेगा–पक्षापक्षी (मेरा-तेरा) रहेगा ही। संबंध वाले सब चैतन्य जब तक प्रगति करते नहीं दिखाई पड़ते तब तक तुम्हारा वर्तन गुणातीत भाव का नहीं। इसे जानने की यह रीत है। अपने वर्तन में ऐसा किसी प्रकार का दोष होगा...।

   इस प्रकार के दोष टालने के लिये क्या करना? समकक्षा के भिन्न-भिन्न अंग वाले पांच जने साथ में मिलजुल कर काम करें।
4. गुणातीत समाज में ऐसे अनेक स्वरूप होंगे जो स्वतंत्र मण्डल चलाते होंगे। उसमें हम अपने ही गुरु को सर्वोपरि साक्षात् स्वरूप मानकर भले ही जुड़ जायें, पर दूसरे ऐसे कोई गुणातीत स्वरूप नहीं या मेरे गुरु से वे छोटे हैं–कम हैं यूं अगर आप मानते हैं तो वह 'एक देशस्थ समझदारी-ज्ञान' कहा जायेगा। एक देशस्थ समझदारी छोड़ कर सर्वदेशीय बनना। सभी महाराज के गुणातीत स्वरूप हैं। जो जिसके साथ जुड़ जाएं वह वहां ठीक ही है। ऐसी मान्यता यदि दृढ़ होगी तो वह सर्वदेशीय समझदारी होगी। तब तुम्हारी दृष्टि बदल जायेगी ! परिणामस्वरूप गुणातीत समाज में भावात्मक एकता स्थापित होगी।
5. क्रांतिकारी युगधर्म और सनातनधर्म दोनों का समन्वय करना पड़ेगा। ब्रह्म के निरूपण में–रीति में फर्क होगा, पर तत्त्व में–सनातनधर्म में

बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। अक्षरपुरुषोत्तम की यह युगल उपासना अखंडित रहेगी। कोई महाराज हुआ नहीं, हो नहीं सकता और होगा भी नही.....

6. गुणातीत ज्ञान में खूब धैर्य चाहिए। महाराज में से आवे, उतना ही, उसकी भक्तरूप हो वैसे ही हम वर्ते। उसकी अनुवृत्ति समझने के लिए धीरज रखना पड़ता है और जहां थोड़ी भी शंका हो या कुछ नया करना हो, महारज का सनातन कायदा बदलना हो वहां ऐसे पांच गुणातीत स्वरूप इकट्ठे हो कर बदलें। एक या दो, महाराज के बनाये कायदे को बदलेंगे तो उसमें बड़ी भूल होनी संभव है।

7. महाराज के साधु और गुणातीत के साधु में अंतर है। महाराज का साधु हो और वह गुणातीत को वैसा निर्दोष न मानता हो या भगवत्स्वरूप (गुणातीतस्वरूप) संत को निर्दोष मानता हो पर उससे हुए भगवदी को वैसा ही निर्दोष नहीं मानता होगा तो उसे संकल्प की बिमारी रहेगी ही। अलौकिक भूमिका में वह चक्कर काटता रहेगा। इसलिये महाराज ने वचनामृत में भगवान और संत दो लिखे। संत सिर्फ भगवान को ही रखते हैं। हमें यदि गुणातीत भाव में रहते होना है तो जितने महाराज रखेंगे उतने गुणातीतभाव में रह पायेंगे।

8. हमें बापा की चैतन्यशुद्धि की लीला नहीं मानी जाती इसलिए हम कनिष्ठ मुक्तों हैं। दृष्टावाले हैं, गुरु के होकर जीते हैं गुरु के प्रति निर्दोष बुद्धि भी है, पर अपनी रीत और अपना अस्तित्व भी है। वह 'स्व' का भाव टाल कर स्वरहित होने गुरुहरि से हुए स्वामीरूप भगवदी का प्रसंग कर लें।

9. गुणातीतभाव में रहते गुणातीत के साधु में आत्मनिष्ठा, स्वरूपनिष्ठा और स्वधर्म तीन चीजें आयेंगी। साधुता अर्थात् सहन ही करना। भिन्न रुचि वाले का यदि आप सहन कर सकते हो तो तुम्हारे भीतर में एकता है। पहले सहन करना–साथीदार का चला लेना तब जाकर महाराज की अनुवृत्ति के मुताबिक करने की सूझ आयेगी। अगर तुम्हें किसी भी प्रकार की उलझन है तो तुम त्यागी हो पर साधु नहीं हो। किसी भी प्रकार की उलझन आये या विक्षेप आये वहां योगीजी महाराज को अन्तर से याद करने लग पड़ो। भगवान को पुकार के दिल की गहराई से प्रार्थना करो–महाराज ! आप प्रगट ही हो, आप प्रेरणा करो। तो महाराज अवश्य–अक्षर को भी लीन करके–तुम्हारी रक्षा करेंगे। महाराज किसी का चलने नहीं देंगे। उचित होगा वही होगा।

प.पू. काकाजी द्वारा दिए गए आदेश हमारे जीवन का आधार बनें...यही 12 जून के महामंगल दिन पर गुणातीतस्वरूपों के चरणों में अन्तर की अभीप्सा !!

★★★

व्रतोत्सवसूची

1.	दि. 12.6.86	गुरुवार	ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन
2.	दि. 16.6.86	सोमवार	नौमी, श्री हरिजयंती
3.	दि. 18.6.86	बुधवार	भीम एकादशी, व्रत
4.	दि. 2.7.86	सोमवार	योगिनी एकादशी, व्रत

PUBLISHED By SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 7128838
Printed at R.P.,Printers, Shahdara, Delhi-110 032